हिरण्यवर्णामित्यादि श्रीसूक्तम्॥*॥रात्री व्यख्यदायतीत्यादि रात्रिसूक्तम् ।१०।१२७।१॥ * ॥ आतून इन्द्र क्षुमन्तमित्यादि गणेशसूक्तम्। ८। ७०।१॥*॥ इयमददाद्रभसम् इत्यादि सरस्वतीसूक्तम्। ६। ६१। १॥*॥ अतो देवा अवन्तु न इत्यादि विष्णुसूक्तम् ।१।२२।१६॥*॥ मेदिनी देवीत्यादि भूसूक्तम्॥*॥आदित्यानामित्यादि-आदित्यसूक्तम् ।७।५।१।१॥*॥त्वं सोम इत्यादि सोमसूक्तम्।१।९१।१॥ इत्यादि ऋग्वेदस्य सूक्तसहस्रम्। यथा। सहस्रमेकं सूक्तानामित्यादि चरणव्यूहः॥ यजुर्व्वेदस्य विशमैशमित्यादि कुमारसूक्तम्। सोमाय पितृमते इत्यादि पितृसूक्तम्। पवमान स्वर्ज्जन इत्यादि पावमानीसूक्तम्। इत्यादि वेदप्रसिद्धम्॥ तथा,—

"जप्यानि सूक्तानि तथैव चैषा-
मनुक्रमेणापि यथास्वरूपम्।"

इति मलमासतत्त्वम्॥

अपि च।

"सन्दर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनसंस्थितः।
स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन्॥"

इति मार्कण्डेयपुराणे देवीमाहात्म्यम्॥

सूक्ता, स्त्री, (सुष्ठु उक्तं कथनं यस्याः।)शारिका। यथा, त्रिकाण्डशेषे।

"सूक्ता मदनशलाका चित्राक्षी शारिकावचण्डा च॥"

सूक्ष्मं, क्ली, (सूच्यते इति। सूच पैशुन्ये + "सूचेः स्मन्।" उणा० ४। १७६। इति स्मन्।) कैतवम्। अध्यात्मम्। इति मेदिनी॥ (यथा, भागवते। ३। ८। १४।

"तस्यार्थसूक्ष्माभिनिविष्टदृष्टे-
रन्तर्गतोऽर्थो रजसा तनीयान्॥")

अलङ्कारविशेषः। यथा,—

"सूक्ष्मं पराशयाभिज्ञे त्वरसाकूतचेष्टितम्।
मयि पश्यति सा केशैः सीमन्तमणिमावृणोत्॥

इति चन्द्रालोकः॥

सूक्ष्मः, पुं, (सूच्+स्मन्।) कतकवृक्षः। इति शब्दरत्नावली॥ अणुः। अल्पे, त्रि। इति मेदिनी॥ (यथा, महाभारते। १। २१३। १५।

"न तस्याः सूक्ष्ममप्यस्ति यद्गात्रे रूपसम्पदा।
नियुक्ता यत्र वा दृष्टिर्न सज्जति निरीक्षताम्॥")

तत्पर्य्यायः।

"अल्पे स्तोके क्षुल्लसूक्ष्मं क्षुल्लकञ्च कृशं तनु।
दभ्रं खुल्ल खुल्लकञ्च स्त्रियां मात्रा त्रुटी कणा।
पुमानणुर्लवो लेशः कणोऽपि च निगद्यते॥"

इति शब्दरत्नावली॥

सूक्ष्मकृष्णफला, स्त्री, सूक्ष्मं कृष्णञ्च फलं यस्याः।) मध्यमजम्बुवृक्षः। इति रत्नमाला॥

सूक्ष्मतण्डुलः, पुं, (सूक्ष्मं तण्डुलं बीजं यस्य।) खस्खसः। इति राजनिर्घण्टः॥

सूक्ष्मतण्डुला, स्त्री, (सूक्ष्मं तण्डुलं बीजं यस्याः।) पिप्पली। इति राजनिर्घण्टः॥

सूक्ष्मदर्शी, [न्] त्रि, (सूक्ष्मं पश्यतीति। दृश + णिनिः।) अतिशयबुद्धिमान्। तत्पर्य्यायः। कुशाग्रीयमतिः२ तत्कालधीः ३ प्रत्युत्पन्नमतिः ४। इति हेमचन्द्रः॥ (यथा, महाभारते। १३। १४। २३।

"न विदुर्यस्य भवनमादित्याः सूक्ष्मदर्शिनः।
स कथं नरमात्रेण शक्यो ज्ञातुं सतां गतिः॥")

सूक्ष्मदारु, क्ली, (सूक्ष्मं दारु।) तनुकाष्ठम्। तत्पर्य्यायः। कलिञ्जः ३। इति त्रिकाण्डशेषः॥

सूक्ष्मपत्रः, पुं (सूक्ष्माणि पत्राणि यस्य।) धान्यकम्। वनजीरकः। देवसर्षपः। लघुवदरः। सूरपर्णम्। वनवर्व्वरी। लोहितेक्षुः। कुक्कुटद्रुः। इति राजनिर्घण्टः। यथा,

"वावलः स्वर्णपुष्पश्च सूक्ष्मपत्रश्च कण्टलः॥"

इति शब्दचन्द्रिका॥

सूक्ष्मपत्रिका, स्त्री, (सूक्ष्माणि पत्राणि यस्याः। ततः कन्। टापि अत इत्त्वम्।) शतपुष्पा। शतावरी। लघुब्राह्मी। क्षुद्रोपोदकी। दुरालभा। आकाशमांसी। इति राजनिर्घण्टः॥

सूक्ष्मपर्णा, स्त्री, (सूक्ष्मं पर्णमस्याः।) जीर्णफञ्जी। डोड़ी। इति राजनिर्घण्टः॥

सूक्ष्मपर्णी, स्त्री, (सूक्ष्मं पर्णमस्याः। ङीष्।) रामदूतीवृक्षः। यथा,—

"रामदूती पर्व्वपुष्पी विशल्या नागदन्तिका।
काण्डली सूक्ष्मपर्णी च भरण्याह्वा फणिज्झका॥"

इति शब्दचन्द्रिका॥

सूक्ष्मपिप्पली, स्त्री, (सूक्ष्मा पिप्पली।) वनपिप्पली। इति राजनिर्घण्टः॥

सूक्ष्मपुष्पी, स्त्री, यवतिक्ता। इति राजनिर्घण्टः॥

सूक्ष्मफलः, पुं, (सूक्ष्मं फलमस्य।) भूकर्व्वुदारः। इति राजनिर्घण्टः॥

सूक्ष्मफला, स्त्री, (सूक्ष्मं फलमस्याः।) भूम्यामलकी। इति रत्नमाला॥

सूक्ष्मबदरी, स्त्री, (सूक्ष्मा बदरी।) भूबदरी। इति राजनिर्घण्टः॥

सूक्ष्मबीजः, पुं, (सूक्ष्मं बीजं यस्य।) खस्खसः। इति राजनिर्घण्टः॥

सूक्ष्मभूतं, क्ली, (सूक्ष्मं भूतम्।) अपञ्चीकृताकाशादिभूतम्। इति वेदान्तसारः॥

सूक्ष्ममक्षिकः, पुं, (सूक्ष्मा मक्षिका तद्वदाकृतिरस्त्यस्येति। अच्।) मशकः। इति राजनिर्घण्टः॥

सूक्ष्ममूला, स्त्री, (सूक्ष्मं मूलं यस्याः।) जयन्ती। इति राजनिर्घण्टः॥

सूक्ष्मवल्ली, स्त्री, (सूक्ष्मा वल्ली।) ताम्रवल्ली। जतुका। इति राजनिर्घण्टः॥

सूक्ष्मवस्त्रं, क्ली, (सूक्ष्मं वस्त्रम्।) श्लक्ष्णवसनम्। सरु कापड़ इति भाषा। यथा। उपभोगोऽपि न सूक्ष्मवस्त्रपरिधानादिना। इति दायभागः॥

सूक्ष्मशरीराणि, क्ली, (सूक्ष्माणि शरीराणि।) ज्ञानेन्द्रियपञ्चकं कर्म्मेन्द्रियपञ्चकं वायुपञ्चकं बुद्धिमनसी चेति सप्तदशावयवानि। इति वेदान्तसारः॥

सूक्ष्मशर्करा, स्त्री, (सूक्ष्मा शर्करेव।) बालुका। इति राजनिर्घण्टः॥

सूक्ष्मशाखः, पुं (सूक्ष्मा शाखा यस्य।) जालवर्व्वूरः। इति राजनिर्घण्टः॥

सूक्ष्मशालिः, पुं, (सूक्ष्मः शालिः।) अणुधान्यविशेषः। तत्पर्य्यायः। सूचिशालिः २ पावशालिः ३ सूचकः ४। अस्य गुणाः। सूमधुरत्वम्। लघुत्वम्। पित्तास्रदाहनाशित्वञ्च। इति राजनिर्घण्टः॥

सूक्ष्मषट्चरणः, पुं, (सूक्ष्माणि षट्चरणानि यस्य।) पक्ष्मयूकः। इति राजनिर्घण्टः॥

सूक्ष्मा, स्त्री, (सूक्ष्म + टाप्।) यूथिका। इति शब्दचन्द्रिका॥ क्षुद्रैला। करुणी। वालुका। इति राजनिर्घण्टः॥

सूक्ष्मैला, स्त्री, (सूक्ष्मा एला।) क्षुद्रैला। गुजुराटी एलाचि इति भाषा। तत्पर्य्यायः। वयस्था २ तीक्ष्णगन्धा ३ त्रपुटी ४ त्रुटिः ५। इति रत्नमाला॥

सूच, त् क पैशुन्ये। इति कविकल्पद्रुमः॥(अदन्त चुरा०-पर०-सक०-सेट्।) दीर्घी। असुसूचत् कथां लोकः कथितवान् इत्यर्थः। इति रमानाथः। पैशुन्यमन्तर्द्रोह इत्येके। इति दुर्गादासः॥

सूचः, पुं, (सीव्यति चरणौ इति। सिव + "सिवेष्टेरू च।" उणा० ४। ९३। इति चट्। टेरूत्वञ्च।) कुशाङ्कुरः। इति केचित्॥

सूचकः, त्रि, (सूचयतीति। सूचपैशुन्ये + ण्वुल्।) पिशुनः। इत्यमरः। ३।१।४७॥ (यथा, मनुः। ४। ७१।

"लोष्टमर्द्दी तृणच्छेदी नखखादी च यो नरः।
स विनाशं व्रजत्याशु सूचकोऽशुचिरेव च॥")

अस्य विवरणं कर्णेजपशब्दे द्रष्टव्यम्॥ (सूचनकर्त्ता। यथा महाभारते। १। १३६। २७।

"द्वारदेशात् समुद्भूतो माहात्मबलसूचकः।
वज्रनिष्पेषसदृशः शुश्रुवे भुजनिस्वनः॥")

सूचकः, पुं, (सीव्यत्यनेनेति। सिव + "सिवेष्टेरू च।" उणा० ४।९३। इति चट्। टेरूत्वञ्च। ततः स्वार्थे कन्।) सीवनद्रव्यम्। (सूचयतीति। सूच + ण्वुल्।) बोधकः। कुक्कुरः। विड़ालः। काकः। इति मेदिनी। के, १६८॥ पिशुनः। बुद्धः। सिद्धः। पिशाचः। इति शब्दरत्नावली॥ सूत्रधारः। कथकः। इति हेमचन्द्रः॥ सूक्ष्मशालिः। इति राजनिर्घण्टः॥

सूचनं, क्ली, (सूच + ल्युट्।) गन्धनम्। इत्यमरः। ३।३। ११४॥ ज्ञापनम्। इति त्रिकाण्डशेषः॥ (यथा, कथासरित्सागरे। १५। १४८।

"भङ्गिसूचनविधौ विशारदो
नारदो मुनिरदर्शनं ययौ॥

सूचना, स्त्री, (सूच + णिच् + युच्। टाप्।) व्यधनम्। दृष्टिः। गन्धनम्। अभिनयः इति।